Boy Name: Sample, DOB: 18:10:2005 - 01:45:00

Girl Name: Abc, DOB: 10:09:2002 - 11:20:00

Mindsutra Software Technologies
www.mindsutra.com
Ph: 9818193410

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

	Sample	Abc
जन्म दिनाकं :	18:10:2005	10:09:2002
दिन :	मंगलवार	मंगलवार
ज्योतिषिय वार	सोमवार	मंगलवार
जन्म समय :	01:45:00	11:20:00
जन्म स्थान :	Ballia	New Delhi, india
अक्षांश	025:45:00N	028:39:00N
रेखांश	084:10:00E	077:13:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00	+00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00	005:50:00
स्थानीय समय संस्कार	000:06:40 hrs	-000:21:07 hrs
स्थानीय समय	001:51:40 hrs	010:58:52 hrs

सांपातिक काल	027:37:22 hrs	010:15:14 hrs
सूर्योदय	05:56:02AM	06:05:59AM
सूर्यास्त	05:20:38PM	06:30:02PM
लग्न :	सिंह	वृश्चिक
लग्नाधिपति	सूर्य	मंगल
राशि (चन्द्रमा)	मेष	तुला
राशिपति :	मंगल	शुक्र
नक्षत्र	अश्विनी	स्वाति
नक्षत्रपति	केतु	राहू
नक्षत्र चरण	2	1
पाया	रजत	लौह
ऋतु	शरद	वर्षा
मास :	कार्तिक	भाद्र
पक्ष	कृष्ण	शुक्ल
तिथि	प्रतिपदा	चतुर्थी
तिथि श्रेणी	नन्दा	रिक्ता
तिथि पति	सूर्य	बुध
करण	विष्टी	विष्टी
करण श्रेणी	चर	चर
करणपति	व्रहमा	यम
सूर्य सिद्धान्त योग	हर्षण	व्रहमा
तत्व	पृथ्वी	अग्नि
तत्वाधिपति	बुध	मंगल
विहग	भारधंक	वायस
वेध	ज्येष्ठा	रोहिणी
आद्याक्षर	Chay	Ru

ग्रह स्थिती

Sample

ग्रह	राशि	अंश	गति	विशेष
लग्न	सिहं	004:11:09	मघा(2)	
सूर्य	तुला	000:37:09	चित्रा(3)	नीच राशि
चन्द्रमा	मेष	005:00:01	अश्विनी(2)	सम राशि
मंगल	मेष	027:34:06	कृतिका(1)	स्व राशि
बुध	तुला	019:34:33	स्वाति(4)	मित्र राशि
बृहस्पति	तुला	004:15:42	चित्रा(4)	शत्रु राशि
शुक्र	वृश्चिक	016:48:50	ज्येष्ठा(1)	सम राशि
शनि	कक्र	016:13:34	पुष्य(4)	स्व नक्षत्र
राहु	मीन	019:02:17	रेवती(1)	सम राशि
केतु	कन्या	019:02:17	हस्ता(3)	सम राशि
हर्षल	कुम्भ	013:15:10	शतभिषा(2)	.....
नेपच्यून	मकर	020:54:11	श्रवण(4)	.....
प्लूटो	वृश्चिक	028:25:56	ज्येष्ठा(4)	.....

Abc

ग्रह	राशि	अंश	गति	विशेष
लग्न	वृश्चिक	001:22:01	विशाखा(4)	
सूर्य	सिहं	023:28:14	पुर्वफाल्ग(4)	स्व राशि
चन्द्रमा	तुला	007:21:35	स्वाति(1)	सम राशि
मंगल	सिहं	013:30:43	पुर्वफाल्ग(1)	मित्र राशि
बुध	कन्या	018:20:29	हस्ता(3)	उच्च राशि
बृहस्पति	कक्र	014:27:25	पुष्य(4)	उच्च राशि
शुक्र	तुला	007:46:59	स्वाति(1)	स्व राशि
शनि	मिथुन	004:18:36	मृगशिर(4)	मित्र राशि
राहु	वृष	019:06:35	रोहिणी(3)	उच्च राशि
केतु	वृश्चिक	019:06:35	ज्येष्ठा(1)	उच्च राशि
हर्षल	कुम्भ	002:08:40	धनिष्ठा(3)	.....
नेपच्यून	मकर	014:43:36	श्रवण(2)	.....
प्लूटो	वृश्चिक	021:04:14	ज्येष्ठा(2)	.....

Sample

लग्न कुण्डली

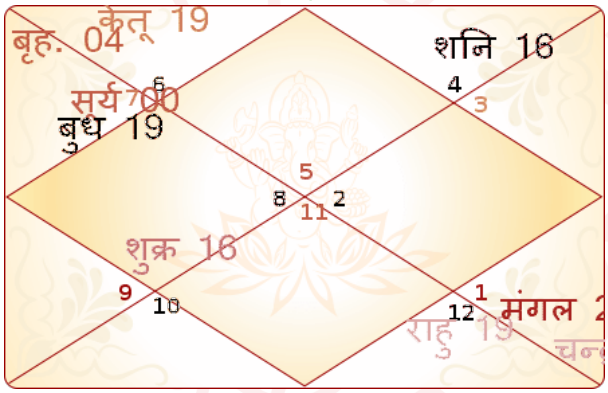

नवांमश कुण्डली

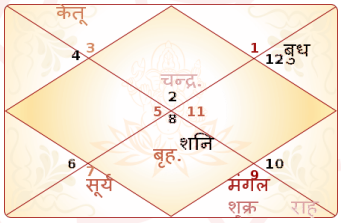

चन्द्र कुण्डली

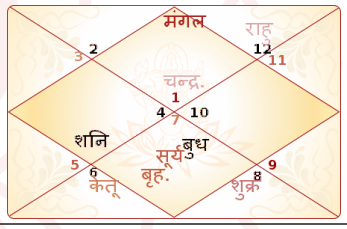

Abc

नवांमश कुण्डली

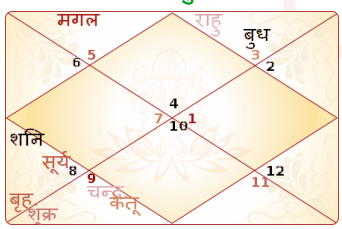

चन्द्र कुण्डली

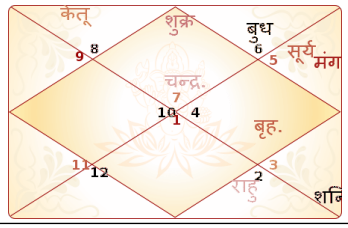

लग्न कुण्डली

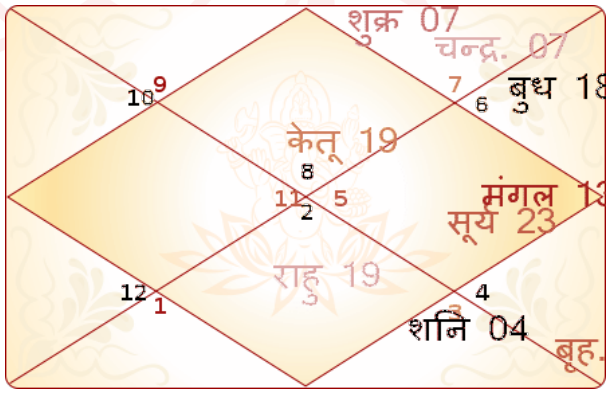

विवाह मेलापक सारिणी

(अष्टकूट सिद्धान्त के अनुसार)

क्र0स0	विवरण	Sample	Abc	पूर्णांक	प्राप्ताकं	अभिप्राय
1	वर्ण कूट	क्षत्रिय	शुद्र	1	1.0	अध्यात्यत्मिक विकास
2	वश्य कूट	चतुश्पद	द्विपद	2	0.5	प्राकृतिक सामजंस्य
3	तारा कूट	प्रत्यरी	प्रत्यरी	3	1.5	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
4	योनि कूट	अश्व	महिष	4	1.0	अव्यक्त विशेषतायें
5	ग्रह–मैत्री कूट	मंगल	शुक	5	3.0	मानसिक प्रकृति
6	गण कूट	देव	देव	6	6.0	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
7	राशि कूट	मेष	तुला	7	7.0	आपसी तालमेल
8	नाड़ी कूट	आदि	अन्त	8	8.0	शारीरिक कारक
	योग			36	28.0	77.78 %

दाम्पत्य सम्बन्धित अन्य विचार

क्र0स0	विवरण	परिणाम
1	नाड़ी––पद कूट	चुकि नाड़ी कूट समझौता भावी दम्पति के कुण्डलियों में उपस्थित है, इसलिए नाड़ी––पद समझौता पर ध्यान देना जरूरी नही है।
2	महेन्द्र कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में महेन्द्र कूट समझौता उपस्थित नही है।
3	स्त्री दीर्घ कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों मे स्त्रीदीर्घ कूट समझौता उपस्थित है। यह बहुत अच्छे वैवाहिक एकरूपता और विवाह सम्बन्धी अनुरूपता का सूचक है।
4	रज्जु कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में रज्जु कूट समझौता उपस्थित है वे किसी भी परेशानी से मुक्त है और वे बहुत सारी खुशियॉ पायेगें ।
5	वेध कूट	चूकि वर और बधु के चन्द्रमा के नक्षत्र परस्पर वेध सम्बन्ध नही स्थापित करतें है, वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझेगें और किसी तरह का आपसी वैमनस्य होने की सभांवना कम ही है ।
6	समान जन्म राशि	वर और वधु के चन्द्रमा के राशि एक समान नही है, इसलिए समान जन्म राशि का प्रश्न ही नही है।
7	समान जन्म नक्षत्र	वर और वधु के नक्षत्र एक समान नही है।
8	समान जन्म नक्षत्र–पद	चूकि वर––वधु के चन्द्रमा का नक्षत्र एक समान नही है इसलिए नक्षत्र पद को देखने की जरूरत नहीं और इस विवाह की अनुमति है।

सुक्ष्मग्राही बिन्दु

	Sample		Abc
बीज––स्फुट(१)	231:41:42	क्षेत्र––स्फुट(१)	065:19:45
बीज––स्फुट(२)	155:42:15	क्षेत्र––स्फुट(२)	023:20:50
बीज––स्फुट(३)	135:46:00	क्षेत्र––स्फुट(३)	323:53:15

मिलान

वर्ण कुट का विश्लेषण —

वर का वर्ण क्षत्रिय है और वधू का वर्ण शूद्र है। चूंकि वर का वर्ण उच्च श्रेणी का है, यह गुण मिलान के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति है, और इस आधार पर वैवाहिक अनुकूलता विद्यमान है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 1 (पूर्णांक– 1) है।

वश्य कुट का विश्लेषण —

वर का वश्य चतुष्पद है, जबकि वधू का वश्य द्विपद समूह का है। यह गुण मिलान के लिए अनुकूल स्थिति नहीं है, और इस आधार पर वैवाहिक अनुकूलता केवल नाम मात्र ही विद्यमान है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 0.5 (पूर्णांक– 2) है।

तारा (दीन) कुट का विश्लेषण —

वधू के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 14.000000000000002 संख्या प्राप्त होती है। 9 से विभाजित करने पर इसमें 0.0 शेष बचता है, यह गुण मिलान के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति है। वर के जन्म नक्षत्र से वधू के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 15.0 संख्या प्राप्त होती है। 9 से विभाजित करने पर इसमें 0.0 शेष बचता है, यह भी अनुकूल है। अतः दिन (तारा) कूट से इस कुण्डली में वैवाहिक अनुकूलता उपस्थित है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 3 (पूर्णांक– 3) है।

योनि कुट का विश्लेषण –

वर और वधू के इस युग्म की कुण्डलियों में, योनि कूट के अनुसार, वर अश्व श्रेणी से संबंधित है, जबकि वधू महिष श्रेणी से संबंधित है। जैसाकि ये दोनों जानवर प्रकृति से एक दूसरे के निश्चयात्मक रूप से बैरी हैं। इसे एक निषेधार्थक युग्म माना जाता है और इसके विवाह की संतुति नहीं दी जानी चाहिए, जब तक कि कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव वर व वधू दोनों की कुण्डली में उपस्थित ना हों।

वर का नक्षत्र अश्व (पु0) श्रेणी का है, जबकि वधू का नक्षत्र महिष (पु0) श्रेणी का है। योनी कूट मिलान के अनुसार, इस योग के लिए 1 प्राप्तांक इस आधार पर प्राप्त हुआ है।

ग्रह मैत्रि कुट का विश्लेषण –

वर का जन्म राशिपति मंगल है और वधू का जन्म राशिपति शुक्र है। नैसर्गिक संबंध के अनुसार ये दोनों अधिपति ग्रह परस्पर सम हैं। यह सामान्य अनुकूल योग है। जैसाकि यह विशेष कूट युगल जोड़े के मनोवैज्ञानिक स्वभावों को दर्शाता है, इस युगल जोड़े की मानसिक विशेषतायें बहुत अनुकूल होंगी, और उनके मध्य एक दूसरे के प्रति काफी लगाव होगा, जो कि वैवाहिक जीवन की खुशहाली के लिए महत्वपूर्ण कारक है। इस आधार पर, कूट

मिलान संख्या में 3.0 अंकों (पूर्णांक–5) का योगदान होगा।

गण कुट का विश्लेषण –

वर का नक्षत्र देव–गण श्रेणी में है, जबकि वधू का नक्षत्र भी देव–गण श्रेणी में स्थित है। यह एक अत्यंत अनूकूल योग है, जैसाकि गण व्यक्ति के मिजाज और रूझान को व्यक्त करता है। भावी दंपत्ति के दोनों सदस्य परिपक्व दृष्टिकोण और धैर्यवान प्रकृति के होंगे। वे कुछ अति वांछित गुणों से पूर्ण होंगे। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 6 (पूर्णांक–6) है।

राशि कुट का विश्लेषण –

वर की जन्म रशि मेष है और वधू की जन्म राशि तुला है। राशि कूट मिलान प्राप्तांक 0 है।

नाड़ी कुट का विश्लेषण –

वर की नाड़ी आदि श्रेणी का है, जबकि वधू की नाड़ी अन्त श्रेणी का है। जैसाकि वर और वधू की नाड़ी समान श्रेणी की नहीं है, संकेत लाभदायक हैं। दोनों को विवाह की सलाह दी जा सकती है, यदि कूट मिलान का कुल योग 18 से कम नहीं है। नाड़ा कुट के आधार पर योगदान 8 गुण का है।

मांगलिक दोष (कुज–दोष)

वर की कुण्डली में, मंगल चंद्र–राशि में स्थित है। उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की भी कोई दशा विद्यमान है या नहीं। हांलांकि, दक्षिण भारतीय पद्धति के अनुसार, मंगल की चंद्र राशि में उपस्थिति कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण नहीं करती है।

कुज–दोष (या मांगलिक दोष) के अपवाद

वर की कुण्डली में, मंगल और चंद्रमा एक साथ एक ही राशि में स्थित है। यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। वर मांगलिक दोष से मुक्त है– वह मंगली नहीं है।

वर की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार, यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। वर मांगलिक दोष से मुक्त है– वह मंगली नहीं है। (हालांकि इस राय को बहुमत प्राप्त नहीं है।)

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.